

आईजीएनसीए का तीन दिवसीय कार्यक्रम

मणिपुरी शास्त्रीय नृत्य एवं ढोल एवं झाल की युगलबंदी ने जीता दिल

रांची। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, क्षेत्रीय शाखा रांची, नॉर्थ ईस्ट, क्षेत्रीय शाखा एवं रांची विश्वविद्यालय के सहयोग से 28 से 30 मार्च तक तीन दिनों का कार्यक्रम आयोजन किया गया जिसमें उत्तर पूर्व भारत की समृद्ध परंपरा को प्रदर्शित किया जा रहा है। असम और मणिपुर के बीस कलाकार जीवंत प्रदर्शन कर रहे हैं। प्रतिष्ठित गणमान्य व्यक्ति, डा. ऋचा नेगी, क्षेत्रीय निदेशक, आईजीएनसीए, उत्तर पूर्व क्षेत्रीय केंद्र डा.अजय कुमार मिश्रा, क्षेत्रीय निदेशक, क्षेत्रीय केंद्र रांची और 29 मार्च को कार्यक्रम के दूसरे दिन उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन डा. कमल कुमार बोस ने किया। इस अवसर पर, बसंत रास - मणिपुरी शास्त्रीय नृत्य की रास लीला का मंचन किया गया। रास लीला शब्द का अर्थ है, नृत्य का दिव्य प्रेम। नृत्य रूप कृष्ण, राधा और गोपियों की कहानी कहता है। रास लीला पारंपरिक मणिपुरी संस्कृति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। रास लीला भगवान कृष्ण के आध्यात्मिक प्रेम का प्रतीक है। यह मणिपुरी



शास्त्रीय नृत्य के सबसे महत्वपूर्ण हिस्सों में से एक है। रास लीला को पहली बार 1779 में निंगथो चिंग-थांग खोंबा द्वारा नृत्य रूप में शुरू किया गया था, जिसे राजर्षि भाग्य चंद्र, 18 वीं शताब्दी की मीती सम्राट के रूप में भी जाना जाता है। वृंदावन में पारंपरिक रास लीला प्रदर्शन के समय, गीत ब्रज भाषा में गाए गए थे। बाद में अधिनियमन के दृश्य प्रतिनिधित्व को महसूस किया गया। मणिपुर में, रास लीला सबसे महत्वपूर्ण आध्यात्मिक अवतार है। मणिपुरी रास लीला की पांच शैलियां हैं: वसंत रास - मार्च-अप्रैल के महीने में पूर्णिमा के दौरान महा रास - नवंबर-दिसंबर के महीने में पूर्णिमा की अवधि पर प्रदर्शन किया जाता है, नित्य रास कुंजा रास औरय दीबा रास - दिन के समय किया जाता है। मणिपुर की रास लीला न केवल चरित्र की दृष्टि से, बल्कि वेशभूषा और आभूषणों में भी अद्वितीय है। असम के सत्त्रिया परंपरा की बंसी (बांसुरी), खोल (ढोल) और झाल (बड़ा झांझ) की संगीतमय जुगलबंदी का भी मंचन किया गया। मणिपुरी और सत्त्रिया परंपराओं के तेजतरार कला रूप काफी शानदार थे और दर्शकों ने कलाकारों को तालियों और शुभकामनाओं के साथ प्रोत्साहित किया। प्रदर्शन के बाद, डा. अजय कुमार मिश्रा, क्षेत्रीय निदेशक, क्षेत्रीय केंद्र रांची ने सभी गणमान्य व्यक्तियों, अतिथियों, दर्शकों, अधिकारियों, प्रेस और मीडिया को कार्यक्रम के आयोजन के लिए उनके योगदान के लिए धन्यवाद दिया।



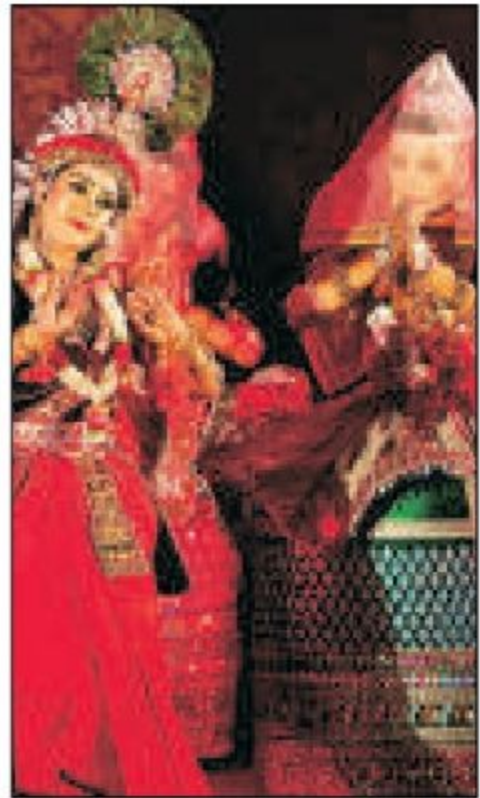
शास्त्रीय नृत्य में राधा-कृष्ण की रास लीला का प्रदर्शन

नाट्योत्सव

रांची | संवाददाता

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, क्षेत्रीय शाखा रांची और नॉर्थ ईस्ट क्षेत्रीय शाखा की ओर से आर्यभट्ट सभागार में उत्तर पूर्व भारत की समृद्ध परंपरा को प्रदर्शित किया जा रहा है। असम और मणिपुर के कलाकार जीवंत प्रदर्शन कर रहे हैं। चल रहे तीन दिनी कार्यक्रम में दूसरे दिन बसंत रास मणिपुरी शास्त्रीय नृत्य की रास लीला का मंचन किया गया। दिव्य प्रेम के इस नृत्य रूप में कृष्ण, राधा और गोपियों की कहानी दिखाई गयी। रास लीला पारंपरिक मणिपुरी संस्कृति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।

रास लीला भगवान कृष्ण के आध्यात्मिक प्रेम का प्रतीक है। रास लीला को पहली बार 1779 में निंगथो चिंग-थांग खोंबा द्वारा नृत्य रूप में शुरू किया गया था। कलाकारों ने बताया कि मणिपुरी रास लीला की पांच शैलियां हैं वसंत रास, महा रास, नित्य रास, कुंजा रास और दीबा रास। इसके बाद असम के परंपरागत क्षेत्रीय नृत्य में कलाकारों



आर्यभट्ट सभागार में शुक्रवार को नृत्य की प्रस्तुति देती कलाकार। • हिन्दुस्तान

ने बांसुरी, ढोल और झाल की संगीतमय जुगलबंदी पेश की। कार्यक्रम के दौरान नॉर्थ ईस्ट क्षेत्रीय शाखा की निदेशक डॉ ऋचा नेगी, रांची केंद्र के निदेशक डॉ अजय कुमार मिश्रा, सहित अन्य गणमान्य लोगों ने कलाकारों का उत्साह बढ़ाया। कार्यक्रम का संचालन डॉ कमल कुमार बोस ने किया।

COLOURS OF CULTURE



■ Classical dancers from Manipur perform 'Rashlila' during a programme organised by the Indira Gandhi National Centre for Arts at Ranchi university on Friday.

DIWAKAR PRASAD/ HINDUSTAN TIMES

Manipuri Raas Leela leaves audience spellbound



Vasant Raas, the Manipuri Raas Leela being staged at Aryabhata Stadium on Friday during Outreach- Portraying the Culture of North East programme

DIVYA MODI/PNS ■ RANCHI

Basant Raas, a form of Raas Leela from Manipur was showcased on the second day of 'Outreach- Portraying the Culture of North East', organised at Aryabhata auditorium of Ranchi University on Friday.

The Indira Gandhi National Centre for the Arts (IGNCA), Regional Centre Ranchi and Ranchi University in collaboration with the IGNC North East Regional Centre is organising a three day event which started on March 28, showcasing the rich tradition of the north eastern states of Assam and Manipur.

A total of 22 artists will be performing at the programme during these three days.

Raas Leela meaning the dance of divine love, narrates the story of Krishna, Radha and the Gopis. It is an important part of the traditional Manipuri culture which symbolises the spiritual love for Lord Krishna. It was first started as a dance form in 1779 by Ningthou Ching- Thang Khomba, also known as Rajarshi Bhagya Chandra, 18th century Meitei monarch.

In the traditional Raas Leela performances, songs were sung in the Vraj language which was later replaced by visual representations. There are five styles of Manipuri Raas Leela namely Vasanta Raas- performed during the full moon in March- April, Maha Raas- performed during

the full moon in November-December. Nitya Raas, Kunja Raas and Diba Raas are performed during the day. Manipuri Raas Leela is unique in terms of character, costume and ornaments.

A musical jugalbandi of Bansi (flute), Khol (drum) and Jhaal (big cymbal) of the Sattriya tradition of Assam was also performed at the programme.

The audience was spell bound with the flamboyant art forms of the Manipuri and the Sattriya tradition, encouraging the performers with loud applause. Towards the end Dr Ajay Kumar Mishra, Regional Director, of IGNC Ranchi centre thanked the distinguished guests present on the occasion.

आर्यभट्ट सभागार. कलाकारों ने उत्तर पूर्व की संस्कृति का किया चित्रण

मणिपुरी शास्त्रीय नृत्य 'बसंत रास' से दर्शक मंत्रमुग्ध, रासलीला दिखायी

लाइफ रिपोर्टर @ रांची

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र क्षेत्रीय शाखा व रांची विश्वविद्यालय द्वारा आर्यभट्ट सभागार में आयोजित उत्तर पूर्व की संस्कृति के चित्रण के दूसरे दिन, शुक्रवार को असम व मणिपुर के 20 कलाकारों ने उत्तर पूर्व भारत की समृद्ध परंपरा प्रदर्शित की। इस क्रम में मणिपुर शास्त्रीय नृत्य, रास लीला का एक स्वरूप 'बसंत रास' प्रस्तुत किया गया। इसमें कृष्ण, राधा व गोपियों की कहानी बतायी गयी। भगवान कृष्ण का आध्यात्मिक प्रेम दिखाया गया। यह नृत्य रूप मणिपुरी शास्त्रीय नृत्य के सबसे महत्वपूर्ण हिस्सों में से एक है। इस अवसर पर बंसी और खोल (ढोल) की संगीतमय जुगलबंदी भी पेश की गयी। कार्यक्रम का संचालन डॉ कमल कुमार बोस ने किया। इस अवसर पर आइजीएनसीए की उत्तर-पूर्व क्षेत्रीय निदेशक डॉ ऋचा नेगी व रांची क्षेत्रीय केंद्र के निदेशक डॉ अजय कुमार मिश्रा मौजूद थे।



असम और मणिपुर के 20 कलाकारों ने उत्तर पूर्व भारत की समृद्ध परंपरा प्रदर्शित की।

मणिपुर में रास लीला सबसे महत्वपूर्ण आध्यात्मिक अवतार

रास लीला को पहली बार 1779 में निंगथो चिंग थांग खोंबा ने एक नृत्य रूप में शुरू किया गया था। उन्हें राजर्षि भाग्य चंद्र, 18 वीं शताब्दी की मेईती सम्राट के रूप में भी जाना जाता है। मणिपुर में रास लीला सबसे महत्वपूर्ण आध्यात्मिक अवतार है। मणिपुरी रास लीला की पांच शैलियाँ हैं। इनमें वसंत रास जो मार्च-अप्रैल के महीने में पूर्णिमा के दौरान प्रदर्शित किया जाता है। महा रास जिसे नवंबर-दिसंबर के महीने में पूर्णिमा की समय प्रदर्शित किया जाता है और नृत्य रास, कुंज रास और दिवा रास, जिसे दिन के समय प्रस्तुत किया जाता है, शामिल हैं।